(99) कृष्णोपनिषत्

(उपनिषत्परिचय)

इस अथर्ववेदीय उपनिषत् में कहा गया है कि नन्द परमानंद है, यशोदा मुक्ति है, देवकी ब्रह्मविद्या और वसुदेव वेद हैं। कृष्ण-बलराम वेदार्थ, गोपियाँ और गायें वेद की ऋचाएँ हैं। कृष्ण की लाठी ब्रह्मा, बाँसुरी रुद्र, शृंग इन्द्र, गोकुल वैकुण्ठ और वहाँ के वृक्ष तपस्वी मुनिगण हैं। गोपालकृष्ण माया द्वारा शरीर धारण किए हुए ईश्वर हैं। वह स्वयं ब्रह्म हैं। चाणूर द्वेष, मुष्टिक मत्सर, कुवलयापीड दर्प, बकासुर गर्व, रोहिणी दया, सत्यभामा अहिंसा, अघासुर महाव्याधि, कंस कलि, सुदामा मनोविग्रह, अक्रूर सत्य, उद्धव इन्द्रियनिग्रह, शंख लक्ष्मी, कश्यप उलूखल, अदिति रस्सी, कालिका गदा, शार्ङ्ग माया, कमल जगद्बीज और तुलसीमाला शक्ति है। ये सब कृष्ण से भिन्न नहीं और कृष्ण उनसे भिन्न नहीं हैं।



शान्तिपाठः

ॐ भद्रं कर्णेभिः......देवहितं यदायुः। (पूर्ववत्)
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इसका हिन्दी रूपान्तर पूर्व में (शाण्डिल्योपनिषत् में) द्रष्टव्य है।

श्रीमहाविष्णुं सच्चिदानन्दलक्षणं रामचन्द्रं दृष्ट्वा सर्वाङ्गसुन्दरं मुनयो वनवासिनो विस्मिता बभूवुः। तं होचुर्नोऽवद्यमवतारान्वै गण्यन्ते आलिङ्गामो भवन्तमिति। भवान्तरे कृष्णावतारे यूयं गोपिका भूत्वा मामालिङ्गथ अन्ये येऽवतारास्ते हि गोपा नः स्त्रीश्च नो कुरु।
अन्योऽन्यविग्रहं धार्यं तवाङ्गस्पर्शनादिह।
शश्वत्स्पर्शयितास्माकं गृह्णीमोऽवतारान्वयम् ॥1॥
रुद्रादीनां वचः श्रुत्वा प्रोवाच भगवान्स्वयम्।
अङ्गसङ्गं करिष्यामि भवद्वाक्यं करोम्यहम् ॥2॥

सच्चिदानन्दस्वरूप श्रीमहाविष्णुरूप रामचन्द्र जी को सर्वांगसुन्दर देखकर वनवासी मुनिलोग विस्मित हुए और उनसे कहने लगे कि अवतार तो अच्छा नहीं। अवतार तो बहुत गिने जाते हैं। हम तो आपके किसी अवतार में आपको आलिंगन करना चाहते हैं। तब भगवान् बोले—'अन्य जन्म में कृष्णावतार में आप सब गोपिकाएँ बनकर मेरा आलिंगन करेंगे।' तब ऋषि लोग बोले—'हमारे अन्य अवतारों में भी हमें आप गोप-गोपियाँ ही रखें। वह हमें स्त्रियाँ बना दे। उस कृष्णावतार में अन्योऽन्यानुकूल स्त्री-पुरुष का रूप धारण करेंगे जिससे कि आपका रमणीय स्पर्श हो सके। हम ऐसे शाश्वत स्पर्श कराने वाले अवतारों को स्वीकार करते हैं।' रुद्रादि देवों का यह वचन सुनकर स्वयं भगवान् ने कहा—'आपका वचन मानकर मैं आपका अंगसंग करूँगा।'

मोदितास्ते सुराः सर्वे कृतकृत्याधुना वयम्।
यो नन्दः परमानन्दो यशोदा मुक्तिगेहिनी ॥3॥
माया सा त्रिविधा प्रोक्ता सत्त्वराजसतामसी।
प्रोक्ता च सात्त्विकी रुद्रे भक्ते ब्रह्मणि राजसी ॥4॥
तामसी दैत्यपक्षेषु माया त्रेधा ह्युदाहृता।
अजेया वैष्णवी माया जप्येन च सुता पुरा ॥5॥
देवकी ब्रह्मपुत्रा सा या वेदैरुपगीयते।
निगमो वसुदेवो यो वेदार्थः कृष्णरामयोः ॥6॥

इस प्रकार भगवान् से प्रसन्न किए गए वे सब देव बोले—'हम कृतकृत्य हो गए।' बाद में जन्मांतर में भगवान् के आनन्द के रूप में नन्द जन्मे। यशोदा मुक्तिरूपिणी ही है। भगवान् की माया सात्विकी, राजसी और तामसी—तीन प्रकार की है। भक्त रुद्र में सात्विकी, ब्रह्मा में राजसी और दैत्यों के पक्ष में तामसी माया कही गई है। और जो एक वैष्णवी माया है वह तो अजेय है। यह माया किसी अन्य मंत्र के जाप से जीती नहीं जा सकती, वह पहले अपनी आत्मा में ही जन्मी अपनी पुत्री के समान है। जो देवकी है वह ब्रह्मपुत्रा (ब्रह्मविद्या) ही है। वह ब्रह्मविद्या वेदों में गायी जाती है। वासुदेव ही निगमरूप हैं और कृष्ण-बलराम—दोनों को वेदार्थ ही कहा जाता है।

स्तुवते सततं यस्तु सोऽवतीर्णो महीतले।
वने वृन्दावने क्रीडन्गोपगोपीसुरैः सह ॥7॥
गोप्यो गाव ऋचस्तस्य यष्टिका कमलासनः।
वंशस्तु भगवान् रुद्रः शृङ्गमिन्द्रः सगोसुरः ॥8॥
गोकुलं वनवैकुण्ठं तापसास्तत्र ते द्रुमाः।
लोभक्रोधादयो दैत्याः कलिकालस्तिरस्कृतः ॥9॥
गोपरूपो हरिः साक्षान्मायाविग्रहधारणः।
दुर्बोधं कुहकं तस्य मायया मोहितं जगत् ॥10॥

जो वेदार्थ सतत जिसकी स्तुति करते हैं, वही परब्रह्मरूप इस भूमिपर वृंदावन के वन में गोपों, गोपियों और देवों के साथ खेल करते हुए (लीला करते हुए) अवतरित हुए हैं। गोपियाँ और गायें वेद की ऋचाएँ हैं, यष्टिका के रूप में ब्रह्मा उत्पन्न हुए, भगवान् रुद्र बाँसुरी बनकर आए, शृंग होकर गायों और देवों के साथ इन्द्र जन्मे और माया द्वारा शरीर धारण करके साक्षात् हरि ही गोप के रूप में आये। उनका रहस्य जानना दुष्कर है। उनकी माया से सारा जगत् मोहित हुआ है।

दुर्जया सा सुरैः सर्वैर्धृष्टिरूपो भवेद्द्विजः।
रुद्रो येन कृतो वंशस्तस्य माया जगत्कथम् ॥11॥
बलं ज्ञानं सुराणां वै तेषां ज्ञानं हृतं क्षणात्।
शेषनागोभवेद्रामः कृष्णो ब्रह्मैव शाश्वतम् ॥12॥
अष्टावष्टसहस्रे द्वे शताधिक्यः स्त्रियस्तथा।
ऋचोपनिषदस्ता वै ब्रह्मरूपा ऋचः स्त्रियः ॥13॥
द्वेषश्चाणूरमल्लोऽयं मत्सरो मुष्टिको जयः।
दर्पः कुवलयापीडो गर्वो रक्षः खगो बकः ॥14॥

वह माया सभी देवों के द्वारा भी दुर्जय है, जिसने ब्रह्माजी को भी यष्टिरूप बना दिया और रुद्र को भी बाँसुरी का रूप दे दिया। उन प्रभु को यह जगत् कैसे जान सकता है ? भगवान् की माया ने देवों का बल और प्राण एक क्षण में हर लिया था। शेषनाग बलराम के रूप में और शाश्वत ब्रह्म ने कृष्ण के रूप में अवतार लिया (वे बलराम और कृष्ण बने।) भगवान् की सोलह हजार एक सौ आठ स्त्रियाँ वेद की ऋचाएँ और उपनिषदें ही हैं। अन्य स्त्रियाँ भी ब्रह्मरूप (वेदरूप) ऋचाएँ ही हैं। द्वेष चाणूर मल्ल हुआ, मत्सर ही अजय मुष्टिक हुआ, दर्प कुवलयापीड हुआ और गर्व पक्षीरूप में बक हुआ।

दया सा रोहिणी माता सत्यभामा धरेति वै।
अघासुरो महाव्याधिः कलिः कंसः स भूपतिः ॥15॥
शमो मित्रः सुदामा च सत्याक्रूरोद्धवो दमः।
यः शङ्खः स स्वयं विष्णुर्लक्ष्मीरूपो व्यवस्थितः ॥16॥
दुग्धसिन्धौ समुत्पन्नो मेघघोषस्तु संस्मृतः।
दुग्धोदधिः कृतस्तेन भग्नभाण्डो दधिग्रहे ॥17॥
क्रीडते बालको भूत्वा पूर्ववत्सुमहोदधौ।
संहारार्थं च शत्रूणां रक्षणाय च संस्थितः ॥18॥

दया रोहिणी माता बनकर आई। धरतीमाता सत्यभामा बनकर आई। महाव्याधि अघासुर और कलि कंस राजा हुए। शम सुदामा मित्र, सत्य अक्रूर और दम उद्धव हुए। जो शंख है, वह स्वयं विष्णु हैं और लक्ष्मी का भाई होने के नाते वह स्वयं लक्ष्मीरूप भी है। वह शंख क्षीरसागर से उत्पन्न हुआ है और मेघ जैसी उसकी आवाज कही गई है। भगवान् ने दही के ग्रहण के लिए दूध के मटके फोड़कर वहाँ क्षीरसागर को ही पैदा कर दिया था। और उसी क्षीर के महासागर में वे पहले की ही तरह अच्छी तरह क्रीड़ा कर रहे हैं। वे शत्रुओं के संहार के लिए और सज्जनों के रक्षण के लिए सदैव व्यवस्थित रहते हैं।

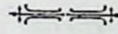
कृपार्थे सर्वभूतानां गोप्तारं धर्ममात्मजम्।
यत्स्रष्टुमीश्वरेणासीत्तच्चक्रं ब्रह्मरूपधृक् ॥19॥
जयन्तीसम्भवो वायुश्चमरो धर्मसंज्ञितः।
यस्यासौ ज्वलनाभासः खड्गरूपो महेश्वरः ॥20॥
कश्यपोलूखलः ख्यातो रज्जुर्माताऽदितिस्तथा।
चक्रं शङ्खं च संसिद्धिं बिन्दुं च सर्वमूर्धनि ॥21॥
यावन्ति देवरूपाणि वदन्ति विबुधा जनाः।
नमन्ति देवरूपेभ्य एवमादि न संशयः ॥22॥

सभी प्राणियों के ऊपर कृपा करने के लिए और अपने आत्मज जैसे धर्म की रक्षा करने वाले ही कृष्ण को जानना चाहिए। ईश्वर (महाकाल) के द्वारा जो चक्र उत्पन्न किया गया वही चक्र कृष्ण के हाथ में ब्रह्मरूप को धारण किए हुए शोभित हो रहा है। भगवान् के जन्मकाल में उत्पन्न हुआ यह वायु चँवर के रूप में बह रहा था वह धर्म ही का रूप था। यहाँ महेश्वर चमकते हुए अग्नि जैसे खड्ग के रूप में आए हैं। काश्यप उलूखल के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं, अदिति रस्सी बनी हैं। जिस भगवान् के शंख और चक्र जैसे आयुध रहते हैं और सब प्राणियों के मस्तक में सहस्रारचक्र में निर्विकल्परूप

सिद्धि को और तुरीयसाक्षात्काररूप बिन्दु को योगीजन प्राप्त करते हैं। वह भगवान् सर्वात्मभाव से रहते हैं। जितने-जितने देवरूपों के बारे में ज्ञानीजन बातें कहते हैं, और जिन्हें लोग देव समझकर नमन करते हैं, वे सब भगवान् श्रीकृष्ण का ही अवलम्बन कर रहे हैं, इसमें कोई संशय नहीं है।

गदा च कालिका साक्षात्सर्वशत्रुनिबर्हिणी।
धनुः शार्ङ्गंस्वमाया च शरत्कालः सुभोजनः ॥23॥
अब्जकाण्डं जगद्बीजं धृतं पाणौ स्वलीलया।
गरुडो वटभाण्डीरः सुदामा नारदो मुनिः ॥24॥
वृन्दा भक्तिः क्रिया बुद्धिः सर्वजन्तुप्रकाशिनी।
तस्मान्न भिन्नं नाभिन्नमाभिर्भिन्नो न वै विभुः ॥25॥
भूमावुत्तारितं सर्वं वैकुण्ठं स्वर्गवासिनाम् ॥26॥
सर्वतीर्थफलं लभते य एवं वेद।
देहबन्धाद्विमुच्यते इत्युपनिषत् ॥27॥

इति कृष्णोपनिषत्समाप्ता।



सर्व शत्रुओं को मारने वाली कालिका ही गदा हुई है। स्वमाया शार्ङ्ग के रूप में प्रकट हुई है। और सर्वभक्षक काल ही बाण बनकर आया है। विश्व का बीज ही भगवान् के हाथ का कमल है, जिसको भगवान् अपने हाथ में लीलापूर्वक धारण करते हैं। गरुड ने ही भाण्डीरवट का रूप धारण किया है। नारद मुनि ही सुदामा बनकर आए हैं। वृन्दा भक्ति का रूप है और सभी प्राणियों की प्रकाशक बुद्धि ही भगवान् की क्रिया है। इसलिए इन गोप-गोपिकाओं से भगवान् भिन्न नहीं हैं और व्यापक प्रभु परमात्मा से वे भी अलग नहीं हैं। भगवान् ने स्वर्गवासियों को और वैकुण्ठ को भूमि पर उतार दिया। जो इस प्रकार जानता है, वह सभी प्रकार का फल प्राप्त कर लेता है। और देह के बन्धनों से मुक्त हो जाता है। ऐसा यह उपनिषत् कहती है।

इस प्रकार कृष्णोपनिषत् समाप्त होती है।



शान्तिपाठः

ॐ भद्रं कर्णेभिः……देवहितं यदायुः। (पूर्ववत्)
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

